eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 02, February 2025

बरेली मण्डल के स्ववित्त पोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में सूक्ष्म शिक्षण की स्थिति का अध्ययन

डॉ मधुप कुमार[1]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर शिक्षा शास्त्र, भारतीय महाविद्यालय फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश)

Received: 15 Feb 2025, Accepted & Reviewed: 25 Feb 2025, Published: 28 Feb 2025

Abstract

शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावी एवं गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में सूक्ष्म शिक्षण (Micro Teaching) एक महत्वपूर्ण शिक्षण तकनीक के रूप में अपनाया जाता है। यह अध्ययन बरेली मंडल के स्ववित्त पोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में सूक्ष्म शिक्षण की वर्तमान स्थिति, उसके प्रभाव एवं उसकी चुनौतियों को समझने का प्रयास करेगा। सूक्ष्म शिक्षण शिक्षकों के प्रशिक्षण की एक वैज्ञानिक विधि है, जिसमें प्रशिक्षुओं को विशिष्ट शिक्षण कौशलों पर ध्यान केंद्रित करने का अवसर मिलता है। इसमें पाठ योजना, प्रस्तुतीकरण, कक्षा प्रबंधन, एवं मूल्यांकन की तकनीकों पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

शब्द कुंजी– शिक्षण प्रक्रिया, बरेली मण्डल, स्ववित्त पोषित, वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक, प्रशिक्षण महाविद्यालय, सूक्ष्म शिक्षण

Introduction

किसी भी राष्ट्र की महत्ता उस राष्ट्र के नागरिकों के गुणों पर आधारित होती है। नागरिकों के गुण मुख्य रूप से शिक्षा के गुण पर आधारित होते हैं। शिक्षा अच्छी प्रकार की तभी हो सकती है, जब शिक्षण संस्थाओं में शिक्षण सम्बन्धी सुविधाओं अकादमिक वातावरण के साथ ही शिक्षण हेतु सुयोग्य, कर्मठ एवं समर्पित शिक्षक भी उपलब्ध हो। शिक्षा की प्रक्रिया में तीन तत्व सम्मिलित होते हैं– शिक्षक, शिक्षार्थी एवं पाठ्यक्रम। शिक्षक, पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों में ज्ञान, भाव या कौशल विकसित करने का प्रयास करता है, जो कि एक जटिल प्रक्रिया है तथा आदान–प्रदान के फलस्वरूप सम्पन्न होती है।

कोठारी कमीशन (1966, पृ0 1) ने कहा है कि ”भारत के भाग्य का निर्माण इस समय उसकी कक्षाओं में हो रहा है।“

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में कहा गया है कि ”किसी समाज में अध्यापकों के दर्जे से उनकी सांस्कृतिक–सामाजिक दृष्टि का पता लगता है। कहा गया है कि कोई भी राष्ट्र अपने अध्यापकों के स्तर से ऊँचा नहीं उठ सकता है।“

सैयदन (1963) ने कहा है कि– ”प्राचीनकाल में शिक्षक ही समाज की स्वतन्त्र चिन्तन के पथप्रणेता थे। आधुनिक काल की आवश्यकता है कि हम शीघ्रातिशीघ्र दण्ड शक्ति के विकल्प में सांस्कृतिक शक्ति को महत्ता प्रदान करें और राष्ट्र को उत्तरोत्तर उन्नति के कल्याणकारी मार्ग की ओर प्रेरित करें। अतः इस युग में परिवर्तन विकास और संरक्षण की सामाजिक शक्ति एक छत्र राज्याधिकारिणी शिक्षा नीति ही है और उसके वाहक हैं शिक्षक। अतः राष्ट्र निर्माण में आज भी शिक्षक की अपनी महत्वपूर्ण भूमिका है।“

मजूमदार (बाबू, 2006) के अनुसार ''शिक्षक प्राचीन, वर्तमान एवं भविष्य में राष्ट्र का निर्माता रहा है, और रहेगा वह पथ प्रकाशक, निर्माणक, संस्कृति वाहक एवं समाज सुधारक है।''

वर्तमान में एम0जे0पी0 रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली में शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का संचालन स्ववित्त पोषित तथा वित्त पोषित दोनों ही प्रकार के महाविद्यालयों में हो रहा है। शिक्षक शिक्षा की महत्ता को स्वीकार करते हुए भारत सरकार ने समय–समय पर गठित विभिन्न आयोगों की सिफारिशों को दृष्टिगत रखते हुए बी0एड0 पाठ्यक्रम को निर्धारित किया गया। बी0एड0 पाठ्यक्रम में समय–समय पर आवश्यकता के अनुरूप परिवर्तन भी किया गया। बी0एड0 पाठ्यक्रम के दो भाग हैं, जिसमें एक भाग सैद्धान्तिक तथा दूसरा भाग प्रायोगिक पाठ्यक्रम का है। एम0जे0पी0 रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली में सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम में कुल 7 प्रश्न पत्रों का अध्ययन प्रशिक्षणार्थी को करना पड़ता है। 7 प्रश्न पत्रों में चार प्रश्न पत्र अनिवार्य, एक प्रश्न पत्र वैकल्पिक तथा 2 प्रश्न पत्र चुने गये शिक्षण अभ्यास विषय से सम्बन्धित होते हैं।

चार अनिवार्य प्रश्न पत्रों के अतिरिक्त छः वैकल्पिक प्रश्न पत्रों में से एक प्रश्न पत्र छात्र अपनी रूचि के अनुरूप चयन करके उसका अध्ययन करता है। विद्यालयी शिक्षण विषयों के प्रश्न पत्रों में से छात्र दो स्कूल विषय का चयन करता है, जिनका अध्ययन वह स्नातक स्तर पर किये होता है। प्रायोगिक पाठ्यक्रम में के अन्तर्गत स्नातक स्तर पर अध्ययन किये गये विषयों में किन्हीं दो स्कूल विषयों में 40 पाठ्य योजनाओं का शिक्षण अभ्यास करना अनिवार्य होता है प्रत्येक विषय की 20 योजनायें होती हैं। स्कूल में शिक्षण से पूर्व, सूक्ष्म शिक्षण और अनुकरण शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों को कराया जाता है।

सूक्ष्म शिक्षण Micro Teaching में छात्राध्यापकों से पाठ योजना का निर्माण करवाया जाता हैं। वह शिक्षण करते हैं फिर अध्यापकों एवं छात्रों से प्रतिपुष्टि (Feedback) देने को कहा जाता हैं यह प्रक्रिया दुबारा दोहराई जाती हैं जिसे सूक्ष्म शिक्षण चक्र (Cycle of Micro Teaching) कहा जाता हैं। विभिन्न कौशल प्रस्तावना कौशल, प्रश्न रचना कौशल, प्रश्न पूछने का कौशल उद्दीपन परिवर्तन कौशल,पुनर्बलन कौशल,उदाहरणों द्वारा स्पष्टीकरण कौशल, श्यामपट्ट लेखन कौशल श्यामपट्ट की उपयोगिता, स्पष्टीकरण कौशल होते हैं।

सूक्ष्म शिक्षण की परिभाषा (Defination of Micro Teaching in) **:–**

एलेन महोदय के अनुसार –"सूक्ष्म शिक्षण समस्त शिक्षण को लघु क्रियाओं में बाटना हैं।"

बी० के० पासी महोदय के अनुसार – "सूक्ष्म शिक्षण (Micro Teaching) एक प्रशिक्षण तकनीक है जो छात्र–अध्यापकों से यह अपेक्षा रखती हैं कि वे किसी तथ्य को थोड़े से छात्रों को कम समय में किसी विशिष्ट शिक्षण कौशल के माध्यम से शिक्षण दें।"

सूक्ष्म शिक्षण की विशेषता (Characteristics of Micro Teaching)

1– यह कम समय में अधिक गुणवत्ता प्रदान करने की प्रविधि हैं।
2– सूक्ष्म शिक्षण (Micro Teaching) एक व्यक्तिगत शिक्षण हैं।
3– सूक्ष्म शिक्षण में एक समय में एक ही कौशल का विकास करने का लक्ष्य रखा जाता हैं।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 02, February 2025

4– सूक्ष्म शिक्षण के अंतर्गत छात्रों की संख्या में कटौती करके 5–6 तक रखी जाती हैं।
5– सूक्ष्म शिक्षण में समय की अवधि को कम करके 5 से 10 मिनट तक रखा जाता हैं।
6– इसके अंतर्गत उचित एवं तत्काल प्रतिपुष्टि(Feedback) की व्यवस्था की जाती हैं।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :–

राष्ट्रीय विकास में शिक्षा की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। किसी देश की सम्पन्नता उस देश के विश्वविद्यालयी शिक्षा से जुड़ी होती है। शिक्षा आयोग 1964–66 **(सिंह, अक्टूबर 2001)** के अनुसार "शिक्षा और राष्ट्रीय प्रगति का गहरा सम्बन्ध है। राष्ट्रीय प्रगति के लिए शिक्षा ही एक माध्यम है।" देश को शिक्षा के माध्यम से ही प्रगति के पथ पर अग्रसर किया जा सकता है। शिक्षा के माध्यम से देश की स्वतन्त्रता, अखण्डता एवं आत्म निर्भरता सुरक्षित रह सकती है। शिक्षा की प्रक्रिया का आवश्यक अंग शिक्षक होता है। जिसे राष्ट्र निर्माता, मार्गदर्शक और उत्तम नागरिकों का निर्माण करने वाला कहा गया है। आज के छात्राध्यापक कल के भावी शिक्षक होते हैं। अतः शिक्षा की प्रगति में शिक्षक प्रशिक्षकों का स्मरणीय योगदान है।

एक सफल अध्यापक वह है, जो शिक्षा और अध्यापन की योजना, निर्देशन और मूल्यांकन का दायित्व पूरा करता है। वह संस्कृति और नागरिकता प्राप्त ऐसा व्यक्ति है, जो यह विश्वास करता है कि उसका कार्य राष्ट्र और समुदाय के विकास में बड़ा महत्वपूर्ण है। इन्हीं वास्तविकताओं को ध्यान में रखना चाहिए। **यूनेस्को (शर्मा, 2005)** ने अपने 5 अगस्त 1968 के प्रस्ताव में कहा है कि "ऐसी नीति जो अध्यापक–शिक्षा में प्रवेश हेतु निर्धारित हो उसे ऐसी आवश्यकताओं पर आधारित होना चाहिए। जो समाज को ऐसे अध्यापक प्रदान करें। जिसमें आवश्यक नैतिकता बौद्धिक एवम् शारीरिक गुण हों, तथा जिसमें व्यावसायिक ज्ञान एवम् कौशल हों।" जर्मनी में कहा जाता है कि "अध्यापक शिक्षा में अध्यापक को सोचना सिखाया जाय न कि उसे मशीन की तरह प्रशिक्षित किया जाए।" यहाँ इस बात पर भी बल दिया गया है कि भावी अध्यापक के विकास में सांस्कृतिक कारक की जागरूकता की आवश्यकता होती हैं, जो सम्पूर्ण दर्शन के विकास को प्रभावित करती हैं। पूर्ण छात्र की अन्तः क्रिया पूरे वातावरण से होती है।

विभिन्न आयोगों एवं समितियों के सुझावों को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षक–शिक्षा के पाठ्यक्रम को समृद्ध बनाया गया है, किन्तु समाज को इसका लाभ तभी मिल सकेगा जब शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में सूक्ष्म शिक्षण की स्थिति का क्रियान्वयन सुचारु रूप से हो। योग्य, कर्मठ एवं समर्पित शिक्षकों पर शिक्षा प्रक्रिया की सफलता निर्भर करती है। शिक्षक ही शिक्षा व्यवस्था को सफलतापूर्वक संचालित करता है। अच्छा शिक्षक योग्य, ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ और व्यावसायिक गुणों से परिपूर्ण होता है। उत्तम शिक्षकों के निर्माण हेतु शिक्षक शिक्षा अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं आवश्यक है। सूक्ष्म शिक्षण एक कौशल पूर्ण कार्य है, जिसमें निपुणता एवं सफलता प्राप्त करने के लिए उत्तम तैयारी की आवश्यकता होती है। यह कार्य शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम को पूर्ण करके किया जाता है। इस दृष्टिकोण से अध्यापक शिक्षा वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा भावी शिक्षकों को शिक्षण सम्बन्धी आवश्यक कौशलों का अभ्यास का ज्ञान कराकर निपुणता प्रदान की जाती है।

अध्ययन का शीर्षक :– "बरेली मण्डल के स्ववित्त पोषित एंव सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों मे सूक्ष्म शिक्षण की स्थिति का अध्ययन"

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 02, February 2025

पदों की परिभाषा :–

1. बरेली मण्डल :

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने उ0प्र0 के बरेली मण्डल का चयन किया। इस मण्डल में बरेली, शाहजहाँपुर, बदायूँ और पीलीभीत जनपद हैं। इन जनपदों के सभी स्ववित्त पोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों को इस अध्ययन में शामिल किया गया है।

2. स्ववित्त पोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय

प्रस्तुत अध्ययन में स्ववित्त पोषित शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालय से तात्पर्य उन महाविद्यालयों से है जिन्हे केन्द्र सरकार, राज्य सरकार एवं विश्वविद्यालय से किसी प्रकार का वित्तीय सहायता प्राप्त नहीं होती है और जो अपने निजी संसाधनों की सहायता से बी0एड0 पाठ्यक्रम को संचालित करते हैं।

3. सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय

प्रस्तुत अध्ययन में सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय से तात्पर्य उन संस्थाओं से है, जिन्हें केन्द्र सरकार, राज्य सरकार एवं विश्वविद्यालय द्वारा वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।

4 सूक्ष्म शिक्षण

बी0एड0 पाठ्यक्रम क्रियान्वयन की स्थिति से तात्पर्य यह है कि राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद एवं एम0जे0पी0 रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली के द्वारा निर्धारित एक वर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम में Micro Teaching मे छात्रों की संख्या एवं समय की अधिकता को कम कर दिया जाता हैं। इसका निर्माण छात्रों में शिक्षक कौशल को विकसित करने के लिए गया गया था। जब छात्राध्यापक शिक्षण के दौरान शिक्षण कार्य करते हैं तो उस समय उनके सामने छात्रों की उपस्थिति को सीमित कर 5 या 6 कर दिया जाता हैं। सूक्ष्म शिक्षण में प्रशिक्षण महाविद्यालय किस प्रकार पूर्ण कराते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य :– बरेली मण्डल के स्ववित्त पोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में सूक्ष्म शिक्षण की स्थिति का अध्ययन।

परिकल्पना :– बरेली मण्डल के स्ववित्त पोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में सूक्ष्म शिक्षण की स्थिति में सार्थक अन्तर नहीं है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण**:–** सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करने पर शोधकर्ता ने ये पाया कि बी0एड0 पाठ्यक्रम से सम्बन्धित विभिन्न पक्ष जैसे शिक्षक शिक्षा को प्रभावी बनाना, पाठ्यक्रम में संशोधन, पाठ्यक्रम को प्रभावित करने वाले कारक, सेवा पूर्व शिक्षक शिक्षा, सेवारत शिक्षक आदि का अध्ययन किया गया। लेकिन बी0एड0 पाठ्यक्रम क्रियान्वयन से सम्बन्धित अध्ययन नहीं किया गया। सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण से शोधकर्ता को बरेली मण्डल के स्ववित्त पोषित एवं सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के बी0एड0 पाठ्यक्रम सूक्ष्म शिक्षण की स्थिति के अध्ययन की प्रक्रिया को निश्चित करने में पर्याप्त सहायता व मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 02, February 2025

शोध विधि :— प्रत्येक अध्ययन की एक विशेष प्रकृति होती है। जिसके अनुसार ही शोध विधि का निर्धारण किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य बरेली मण्डल के स्ववित्त पोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में बी0एड0 पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन की स्थिति का अध्ययन करना था। अतः प्रस्तुत अध्ययन में शोध की वर्णात्मक विधि को प्रयोग में लाया गया है।

जनसंख्या :— प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या से तात्पर्य उत्तर प्रदेश के बरेली मण्डल के समस्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थियों से है।

न्यादर्श :— प्रस्तुत अध्ययन बरेली मण्डल के प्रशिक्षणार्थियों से सम्बन्धित है। बरेली मण्डल में दो प्रकार शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाएं हैं— (क) स्ववित्त पोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाएं (ख) वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाएं। स्ववित्त पोषित 13 शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में से यादृच्छिक विधि से 7 महाविद्यालयों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है। चयनित इन सात महाविद्यालयों के बी0एड0 पाठ्यक्रम में अध्ययनरत 50% (350) प्रशिक्षणार्थियों तथा वित्तीय सहायता प्राप्त सभी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के लगभग 50% (210) प्रशिक्षणार्थियों को न्यादर्श के रूप में चुना गया। इनमें से 10 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रश्नावली को बिना पूर्ण रूप से भरे ही वापस कर दिया। फलतः वित्तीय सहायता प्राप्त महाविद्यालयों से मात्र 200 प्रशिक्षणार्थियों को ही अध्ययन में सम्मिलित किया गया है।

शोध उपकरण :— विभिन्न संस्थाओं द्वारा उपलब्ध मानकीकृत व प्रकाशित उपकरणों की सूची देखने से यह स्पष्ट हुआ कि प्रस्तुत समस्या पर आधारित कोई भी शोध उपकरण उपलब्ध नहीं है। इस परिस्थिति व अध्ययन के उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुये शोधकर्ता द्वारा बी0एड0 पाठ्यक्रम क्रियान्वयन मापनी निर्मित करने का निर्णय लिया गया। इस मापनी का निर्माण निम्न चरणों के अन्तर्गत सम्पन्न हुआ।

बी0एड0 पाठ्यक्रम क्रियान्वयन मापनी का निर्माण :— इस उपकरण की रचना में निम्न सोपानों का अनुकरण किया गया।

1. योजना
2. एकांशों की रचना
3. एकांशों का संशोधन
4. मुद्रीकरण

प्रयुक्त सांख्यिकी विधियाँ :— इस अध्ययन में संग्रहीत प्रदत्तों से निष्कर्ष निकालने हेतु प्रतिशत और काई वर्ग का प्रयोग किया गया है। काई वर्ग का मान मूल प्राप्तांकों के आधार पर किया गया है, प्रतिशत के आधार पर नहीं।

3.7.1. प्रतिशतता :— प्रतिशत दो शब्दों प्रति और शत से मिलकर बना है। प्रति का अर्थ प्रत्येक के लिए और शत का अर्थ है 100 से। अतः प्रतिशत का अर्थ प्रत्येक सौ के लिए हुआ। इसे % चिन्ह से प्रदर्शित किया जाता है।

सूत्र :

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 02, February 2025

$$\text{प्रतिशत} = \frac{\text{प्राप्त संख्या}}{\text{कुल संख्या}} \times 100$$

काई वर्ग परीक्षण :–

काई शब्द ग्रीक भाषा से लिया गया है। इसे सर्वप्रथम कार्ल पीयर्सन ने (1900) में सांख्यिकी में प्रयुक्त किया था। इन्होंने आवृत्तियों के अन्तर के आधार पर अर्थापन का प्रयास किया था।

सूत्र :

$$\chi^2 = \Sigma\left[\frac{(f_0 - f_e)^2}{f_e}\right]$$

$$\text{काई वर्ग} = \left[\frac{(\text{प्राप्त आवर्त्ति} - \text{प्रत्याशित आवत्ति})^2}{\text{प्रत्याशित आवत्ति}}\right]$$

χ^2 = काई वर्ग

Σ = योग

f_0 = प्राप्त या मापित आवृत्ति

f_e = प्रत्याशित आवृत्ति

विश्लेशण, व्याख्या एवं परिणाम

इस अध्याय में अनुसंधान समस्या से सम्बन्धित न्यादर्श पर सम्बन्धित उपकरण के माध्यम से संकलित प्रदत्तों से निष्कर्ष निकालने हेतु आकड़ों को सारणीबद्ध किया गया तथा सांख्यिकीय गणना के उपरान्त निष्कर्ष पर पहुँचा गया है। जिसका वर्णन निम्नवत है :

तालिका

स्ववित्त पोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में सूक्ष्म शिक्षण की स्थिति

क्र0 सं0	प्रश्न क्रमांक संख्या	स्ववित्त पोषित शिक्षण महाविद्यालय	वित्तीय सहायता प्राप्त महाविद्यालय	काई वर्ग
		प्रशिक्षणार्थी (350)	प्रशिक्षणार्थी (200)	

		हाँ		नहीं		हाँ		नहीं		
		संख्या	:	संख्या	:	संख्या	:	संख्या	:	
1.	प्र01 क्या आपके संस्थान में सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास कराया जाता है?	321	91.72	29	8.28	68	34.00	132	66.00	204.76
2.	प्र02 यदि हाँ तो कितने पाठों का —— 1) 1 से 3 2) 4 से 6 3) 7 से 9 4) 10 से 12	0.00 147 100 74	0.00 45.79 31.15 23.06			0 26 42 0	0.00 38.24 61.76 0.00			12.7
3.	प्र03 आपको सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास में कौन–कौन से कौशलों को कराया जाता है? 1) पाठ प्रस्तावना कौशल 2) प्रश्न कौशल 3) व्याख्या कौशल 4) उद्दीपन परिवर्तन कौशल 5) दृष्टांत कौशल	212 265 146 246	66.04			68 65 60 22	100.0 95.59			

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 02, February 2025

	6) श्यामपट्ट कौशल 7) पुर्नवलन कौशल 8)पाठ समापन कौशल 9) कक्षा कक्ष प्रबन्ध कौशल	61 317 298 90 109	82.55 45.78 77.60 19.24 100.0 94.01 23.40 34.38			44 63 43 22 60	88.24 32.35 64.70 92.64 63.24 32.35 88.23			105.73

तालिका में स्ववित्त पोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त महाविद्यालयों में सूक्ष्म शिक्षण की स्थिति से सम्बन्धित इस तालिका के अवलोकन से विदित होता है कि स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों के 321 (91.72%) प्रशिक्षणार्थियों ने बताया था कि उनके महाविद्यालय में सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास कराया जाता है। केवल 29 (8. 28%) प्रशिक्षणार्थियों ने बताया कि उनके महाविद्यालय में सूक्ष्म शिक्षण नही कराया जाता है। वही वित्तीय सहायता प्राप्त महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत 68 (34%) प्रशिक्षणार्थियों ने बताया कि उनके महाविद्यालय में सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास कराया जाता है तथा 132 (66%) प्रशिक्षणार्थियों ने बताया कि उनमें महाविद्यालय में सूक्ष्म शिक्षण नहीं कराया जाता है। इस सम्बन्ध में काई वर्ग का मान 204.76 पाया गया, यह मान (1 डी0एफ0) 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः इस सम्बन्ध में शून्य परिकल्पना अस्वीकार की गयी है। इससे यह निष्कर्ष निकला कि स्ववित्त पोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त महाविद्यालयों में सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास द्वारा शिक्षण कौशलों के विकास की स्थिति में अन्तर विद्यमान था।

इसी तालिका के प्रश्न संख्या 2 के अवलोकन से विदित होता है कि स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों के 147 (45.79%) प्रशिक्षणार्थियों के अनुसार उनके महाविद्यालय में सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास 4–6 पाठों का, 100 (31.15%) प्रशिक्षणार्थियों ने यह बताया कि उनके महाविद्यालय में सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास 7–9 पाठों का

तथा 74 (23.06%) प्रशिक्षणार्थियों ने यह बताया कि उनके महाविद्यालय में सूक्षम शिक्षण अभ्यास 10–12 पाठों का कराया जाता है। जबकि वित्तीय सहायता प्राप्त महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत 26 (38.24%) प्रशिक्षणार्थियों ने स्वीकार किया कि उनके महाविद्यालय में सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास 3–6 पाठों का और 42 (61.76%) प्रशिक्षणार्थियों के अनुसार उनके महाविद्यालय में सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास 7–9 पाठों का कराया जाता है। इस सम्बन्ध में स्ववित्त पोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त प्रशिक्षणार्थियों के मध्य काई वर्ग का मान 12. 70 पाया गया, यह मान (3 डी0एफ0) 0.01 स्तर सार्थक है। अतः इस सम्बन्ध में शून्य परिकल्पना अस्वीकार की गयी है। इससे यह निष्कर्ष निकला कि स्ववित्त पोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षण–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास के पाठों के आधार पर सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास में अन्तर था।

इसी तालिका के प्रश्न 3 के अवलोकन से विदित होता है कि स्ववित्त पोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थियों में सूक्ष्म शिक्षण के अभ्यास द्वारा शिक्षण कौशलों के विकास की स्थिति निम्नवत है। स्ववित्त पोषित प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत सबसे अधिक 317 (100%) प्रशिक्षणार्थियों ने श्यामपट प्रयोग कौशल, द्वितीय स्थान पर 298 (94.01%) प्रशिक्षणार्थियों ने पुर्नवलन कौशल तथा तृतीय स्थान पर 265 (82.55%) प्रशिक्षणार्थियों ने प्रश्न कौशल का विकास सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास के माध्यम से करने की बात स्वीकार की। दृष्टात कौशल, कक्षा कक्ष प्रबन्ध कौशल तथा पाठ समापन कौशल के सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास के द्वारा विकास की बात सबसे कम क्रमशः 61 (19.24%), 109 (34.38:) तथा 90 (23.40%) प्रशिक्षणार्थियों ने स्वीकार की। पाठ प्रस्तावना कौशल 212 (66.04%) , व्याख्या कौशल 146 (45.78%) तथा उद्दीपन परिवर्तन कौशल को सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास के द्वारा विकास की बात को 246 (77.60:) विद्यार्थियों ने स्वीकार किया। वित्तीय सहायता प्राप्त प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत सबसे अधिक 68 (100:) प्रशिक्षणार्थियों ने पाठ प्रस्तावना कौशल, द्वितीय स्थान पर 65 (95.59%) प्रशिक्षणार्थियों ने प्रश्न कौशल तथा तृतीय स्थान पर 63 (92.64%) प्रशिक्षणार्थियों ने श्यामपट्ट प्रयोग कौशल का विकास सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास के माध्यम से करने की बात स्वीकार की। उद्दीपन परिवर्तन कौशल, पाठ समापन कौशल तथा पुर्नवलन कौशल के सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास के द्वारा विकास की बात सबसे कम क्रमशः 22 (32.35%), 22 (32.35%) तथा 43 (63.24%) प्रशिक्षणार्थियों ने स्वीकार की। व्याख्या कौशल 60 (88.24%) , कक्षा कक्ष प्रबन्ध कौशल 60 (88.24%) तथा दृष्टांत कौशल को सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास के द्वारा विकास की बात को 44(64.70%) प्रशिक्षणार्थियों ने स्वीकार किया। उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि वित्तीय सहायता प्राप्त प्रशिक्षण महाविद्यालयों में जहाँ प्रस्तावना कौशल, प्रश्न कौशल तथा श्यामपट्ट प्रयोग कौशल के विकास पर सूक्ष्म शिक्षण के माध्यम से अधिक बल दिया जा रहा था, वही स्ववित्त पोषित संस्थाओं में भी श्यामपट्ट प्रयोग कौशल एवं प्रश्न कौशल के साथ–साथ पुनर्वलन कौशल के विकास का प्रयास सूक्ष्म शिक्षण के माध्यम से किया जा रहा है। इन दोनों समूहों के मध्य काई वर्ग मान 105.73 पाया गया, यह मान (8 डी0एफ0) 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार की गयी। इससे यह निष्कर्ष निकला कि स्ववित्त पोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत प्रशिक्षणार्थियों में सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास के द्वारा कौशलों के विकास की स्थिति में अन्तर था।

सारांश एवं निष्कर्ष :– अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष निम्नवत हैं

❖ वित्तीय सहायता प्राप्त महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत अधिक प्रशिक्षणार्थियों ने सूक्ष्म शिक्षण किया। स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों में जहाँ सबसे अधिक लगभग 45% प्रशिक्षणार्थिंयों ने 4–6 पाठों का सूक्ष्म शिक्षण कराये जाने की बात स्वीकार की, वहीं वित्तीय सहायता प्राप्त महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत सबसे अधिक लगभग 62% प्रशिक्षणार्थियों ने 7–9 कालांश का सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास कराये जाने की बात स्वीकार की, वित्त पोषित संस्थानों में प्रस्तावना कौशल, प्रश्न कौशल, व्याख्या कौशल, पुर्नवलन कौशल, कक्षा–कक्ष प्रबन्ध कौशल को सूक्ष्म शिक्षण में अधिक महत्व दिया गया, जबकि स्ववित्त पोषित संस्थाओं में प्रश्न कौशल, उद्दीपन परिवर्तन कौशल, पुर्नवलन कौशल तथा श्यामपट कौशल को महत्व दिया गया। श्यामपट कौशल का अभ्यास इन संस्थाओं में प्रशिक्षणरत उन सभी प्रशिक्षणार्थियों ने किया, जिन्होंने सूक्ष्म शिक्षण किया था। सूक्ष्म शिक्षण की स्थिति के सम्बन्ध में दोनों प्रकार के महाविद्यालयों के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया।

<u>शैक्षिक निहितार्थ</u> :–

समाज में यह धारणा बनी हुई है कि स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों में में सूक्ष्म शिक्षण की स्थिति का क्रियान्वयन सुचारू रूप से नहीं कराया जाता, किन्तु इस अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि स्ववित्त पोषित प्रशिक्षण महाविद्यालयों में में सूक्ष्म शिक्षण की स्थिति का क्रियान्वयन वित्तीय सहायता प्राप्त महाविद्यालयों की अपेक्षा अधिक सुचारू रूप से कराया जा रहा है। बी0एड0 पाठ्यक्रम में सूक्ष्म शिक्षण के द्वारा पाठ्यक्रम तथा कक्षा अनुशासन समझने में सुविधा प्रदान करती है। सूक्ष्म शिक्षण अत्यंत लचीली प्रविधि है, जो विषय एवं परिस्थितियों के आधार पर व्यवस्थित होती है। पाठ्यक्रम के अवधि तथा विषयों की जटिलताओं को दूर करने के लिए सूक्ष्म शिक्षण अति आवश्यक है। सूक्ष्म शिक्षण के द्वारा छात्रों में आए परिवर्तन के आधार पर तुरंत ही पृष्ठपोषण प्रदान किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में स्ववित्त पोषित संस्थानों में वित्तीय सहायता प्राप्त संस्थानों की अपेक्षा में सूक्ष्म शिक्षण अधिक प्रभावी ढंग से कराया जाता है। एन.सी.टी.ई. के मानक के अनुरूप प्रत्येक विषय के में 20 सूक्ष्म शिक्षण अनिवार्य रूप से कराए जाने चाहिए। लेकिन वित्तीय सहायता प्राप्त महाविद्यालयों में सूक्ष्म शिक्षण प्रभावी ढंग से नहीं कराया जाता है। एन.सी.टी.ई. ,राज्य सरकार और विश्वविद्यालय को बी0,ड0 पाठ्यक्रम संचालित करने वाले संस्थाओं पर ध्यान देना चाहिए । मानक के अनुरूप ही छात्रों को सूक्ष्म शिक्षण कराया जाना चाहिए,जिससे उन्हें सूक्ष्म शिक्षण का लाभ प्राप्त हो

<u>भावी अध्ययन हेतु सुझाव</u> :–

भावी अध्ययन हेतु प्रस्तुत सुझाव निम्नवत हैं––

1. प्रस्तुत अध्ययन बरेली मण्डल के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत प्रशिक्षणार्थियों से सम्बन्धित था। भावी शोधकर्ता अन्य क्षेत्र अथवा और व्यापक क्षेत्र पर बी0एड0 पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन की स्थिति का अध्ययन कर सकते हैं।

2. भावी शोध छात्र मौलिक क्षेत्र, पर्वतीय–मैदानी–तराई अथवा बुन्देलखण्ड, रूहेलखण्ड, उत्तराखण्ड, अवध के आधार पर बी0एड0 पाठ्यक्रम के सूक्ष्म शिक्षण का अध्ययन कर सकते हैं।

3. भावी शोध छात्र ग्रामीण एवं शहरी परिवेश में स्थित महाविद्यालयों में बी0एड0 पाठ्यक्रम के सूक्ष्म शिक्षण का अध्ययन की स्थिति अध्ययन कर सकते हैं।
4. भावी शोध छात्र केन्द्रीय विश्वविद्यालयों, राज्य विश्वविद्यालय, संस्कृत विश्वविद्यालय तथा डीम्ड विश्वविद्यालय के बी0एड0 पाठ्यक्रम के सूक्ष्म शिक्षण का अध्ययन का अध्ययन कर सकते हैं।

Bibliography:–

Arya, R. (2004), **Comparative Analysis of Two Year B.Ed. of RIE, Ajmer with the One Year B.Ed. Programme of M.D.S. University, Ajmer,** Research Report, N.C.E.R.T., New Delhi.

बेस्ट, जे0 डब्ल्यू (2007) **रिसर्च इन एजूकेशन**, प्रेन्टिस हॉल ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली, पृष्ठ 214।

Basu, R., (1995), **Financing of Higher Education in India : Some Relevant Issues for Education Policy,** Social Perspective, Vol. 3, P. 2-3.

भार्गव, आर0 (1989–90), **आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन**, हर प्रसाद भार्गव, आगरा।

ब्रजलाल (1995), **सामान्य मानसिक योग्यता**, यूनिक पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृष्ठ 93–94।

ब्रटा, के0डी0 (2002), **व्यवहारपरक अनुसंधान में प्रायोगिक अभिकल्प**, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

Burnett, G., Lingam, G.I. (2007), **Reflective Teachers and Teacher Educators in the Pacific Region,** International Review of Education, New York, Vol. 53, No. 3, p 303-321.

चौधरी, के0के0 (2000), **माध्यमिक विद्यालय में भूगोल शिक्षण**, गीतांजलि प्रकाशन, बरेली।

गैरेट, एच.ई. (1998), **शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी**, कल्याणी पब्लिशर्स, नोएड़ा।

कपिल, एच.के. (1992), **सांख्यिकी के मूल तत्व**, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

कौल, एल0 (1998), **शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली**, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा0 लि0, नई दिल्ली।

Kerlinger, F.N. (1983), **Foundation of Behavioural Research,** (II Ed.), Holt Rinehart, Winston, Inc. New York.

लाल, आर0 बी0 (2007), **शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त,** रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ।

एन0सी0ई0आर0टी0, (2001), **विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में अनुभव**, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली।

एन0सी0ई0आर0टी0, (2004), **उत्तर प्रदेश में विद्यालयी शिक्षा अवस्थिति चुनौतियाँ एवं भावी सम्भावनाएं**, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली।

.Rani, T. & Priadarsaini, J.R. (2004), **Educational Measurement and Evaluation Discovery**, Publishing House, New Delhi.

रस्क, आर0आर0 (1972), **शिक्षा के दार्शनिक आधार**, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986), मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।

शुक्ला, सी0एस0 (2006), **भारत में शिक्षा प्रणाली का विकास,** इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।

सिंह, के0 (2008), **उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक**, गोविन्द पब्लिकेशन, लखीमपुर।

Sinha, U.P., (1980), **The Impact of the Teacher Education Program on the Professional Additionnincy of Teachers,** M.Ed. Desertion, Udipur.

सैयदन, के0जी0 (1963), **शिक्षा की पुनर्रचना**, फर्स्ट एशिया पब्लिशिंग हाउस, बम्बई, पृष्ठ 329A

श्रीवास्तव, डी0एन0 एवं वर्मा, प्रीति (2006), **मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकीय,** विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

त्रिपाठी, एल0 (2006), **मनोवैज्ञानिक अनुसंधान पद्धतियाँ**, एच0पी0 भागर्व बुक हाउस, आगरा।

यंग, पी.वी. (1990), **साइन्टीफिक एण्ड सोशल रिसर्च**, एशिया पब्लिशिंग हाउस, बम्बई।